हर बच्चे तक पहुंच ज़रूरी

केंट हिल

गरीब और विकासशील देशों में लाखों बच्चों की ज़िंदगियां बचाने के लिए ज़रूरी है कि टीकाकरण के लाभ हर बच्चे तक पहुंचें। यूएसएड ने इसमें अहम भूमिका निभाई है।

आधी सदी से भी ज़्यादा समय से चिकित्सा विज्ञान ने यह देखा है कि संक्रामक बीमारियों से बचाव के लिए बड़े पैमाने पर आम टीकाकरण के जरिये बच्चों की ज़िंदगियां बचाई जा सकती हैं और माता-पिता को अपनी औलाद खोने के उस दुख से बचाया जा सकता है जो इस सहस्त्राब्दी में छाया रहा है। बीमारी से मुक्त बच्चे स्वस्थ प्रौढ़ बन सकते हैं और बेहतर समाज के विकास में योगदान दे सकते हैं।

टीकाकरण की जानकारी एक बात है, लेकिन टीकों को हर बच्चे तक पहुंचाने की बात ज़्यादा बड़ी चुनौती है। अमेरिकी अंतरराष्ट्रीय सहायता एजेंसी यानी यूएसएड ने 1970 के दशक से ही पूरे विश्व में अपने भागीदारों के साथ इस चुनौती का मुकाबला किया है और दुनिया के कम विकसित दूरदराज स्थित इलाकों में बच्चों के टीकाकरण में मदद की है। पिछले कई दशकों में करोड़ों बच्चों ने टीकाकरण की थोड़ी देर की असुविधा और दर्द झेलकर खुद को बीमारियों से बचाया है।

यूएसएड 1970 के दशक में विश्व को चेचक से मुक्ति दिलाने के अभियान में भागीदार था। इस अमेरिकी संस्था ने 1980 के दशक में टीबी, पोलियो, डिप्थिरिया, कुकुरखांसी, टिटनिस और खसरे से बच्चों को बचाने के विश्व स्वास्थ्य संगठन के विस्तारित टीकाकरण अभियान में मदद दी। वर्ष 1990 तक इन बीमारियों से बचाव के लिए टीकाकरण अभियान दुनिया के 70 फीसदी बच्चों तक पहुंच चुका था और इन घातक लेकिन रोकी जा सकने वाली बीमारियों के मामलों में काफी कमी आई। विश्व स्तर पर यह अच्छी खबर थी लेकिन अफ्रीका और एशिया का प्रदर्शन इस मोर्चे पर कमजोर ही रहा और इस पर ध्यान देने की ज़रूरत थी। हमने यह जाना है कि चुनौती कभी खत्म नहीं होती और इनसे निपटने का काम जारी रहता है।

टीकाकरण का स्तर 1990 के दशक में अपने चरम तक पहुंच चुका था और उसके बाद इसमें कुछ खास वृद्धि नहीं हो रही थी बल्कि कुछ देशों में तो इसमें गिरावट आई। टीकाकरण अभियान के धीमे होने के कई कारण थे लेकिन इसका अर्थ यह कतई नहीं था कि काम पूरा हो चुका था। आर्थिक रूप से कमजोर देशों में दूसरी चीजों को प्राथमिकता देने का मसला था। दानदाता भी अपना ध्यान अन्य भीषण समस्याओं पर देने लगे।

वर्ष 1999 में टीकाकरण में आई इस ढिलाई ने एक और पहल को जन्म दिया। यह थी टीकाकरण के लिए विश्वव्यापी पहल- ग्लोबल एलिएंस फॉर वैक्सीन एंड इम्यूनाइजेशन यानी गावी। यह ऐसा गठबंधन है जिसका लक्ष्य है व्यापक पैमाने पर टीकाकरण के जरिये बच्चों का जीवन बचाना और लोगों को स्वस्थ रखना। सरकारों, अंतरराष्ट्रीय संगठनों, टीका निर्माताओं, गैरसरकारी संगठनों और जन स्वास्थ्य संस्थानों का यह ताकतवर गठबंधन अंतरराष्ट्रीय विकास सहायता को लोगों तक पहुंचाने के लिए नए मॉडल को तैयार कर रहा है। इसी उद्देश्य के अनुरुप गावी ऐसे कार्यक्रमों के लिए धन मुहैया कराता है जो स्वास्थ्य एवं टीकाकरण तंत्र को और मजबूत करें और साथ ही, नए टीकों और टीकाकरण प्रौद्योगिकियों तक लोगों की त्वरित पहुंच में मदद करें।

एक चिकित्सा क्लीनिक में झांकते बच्चे जहां उन्हें नियमित रूप से टीकाकरण की सुविधा हासिल है।

मर्सी कार्प्स/ बेयर कुक/ यूएसएड

अपनी शुरुआत के बाद से गावी कोष में दानदाता तीन अरब डॉलर से ज़्यादा की धनराशि दे चुके हैं। इसमें से एक अरब डॉलर की धनराशि टीकाकरण अभियान चला रहे देशों को जारी की जा चुकी है। इस कोष ने दुनिया के 73 सबसे गरीब देशों के बच्चों के टीककाकरण के लिए स्थायी और टिकाऊ व्यवस्था बनाने के लिए कई तरह के अनुदान दिए हैं। अमेरिका गावी कोष को सबसे ज़्यादा सहायता देने वाला देश बना हुआ है। इसकी शुरुआत से अब तक अमेरिका 35 करोड़ डॉलर की मदद दे चुका है।

गावी के सक्रिय होने के शुरू के पांच सालों में लगभग 10 करोड़ अतिरिक्त बच्चों को नए टीके लगाए गए। वर्ष 2006 में तीन करोड़ 80 लाख बच्चों तक इसकी पहुंच रही। विश्व स्वास्थ्य संगठन का आकलन है कि गावी के प्रयासों के चलते विश्व में 23 लाख बच्चों को मौत के मुंह में जाने से बचा लिया गया। इतने कम समय में इतने ज़्यादा बच्चों तक पहुंच सुनिश्चित कर गावी ने विश्व स्तर पर प्रभाव छोड़ा है और अब भविष्य के टीके शुरू करने की राह पर है। गावी गठबंधन अब नए चरण में पहुंच रहा है। इसके तहत स्वास्थ्य के लिए विश्व विकास सहायता में बढ़ोतरी का लक्ष्य है और नए, बेहतर और कम खर्चीले टीकाकरण के प्रयासों की रणनीति बनाने का उद्देश्य है।

टीकाकरण कार्यक्रमों के ज़्यादा से ज़्यादा बच्चों तक पहुंचने के लिहाज से पहले ही अच्छी सफलता मिल चुकी

बाएं: बलिया, उत्तर प्रदेश में डीपीटी और बीसीजी के टीके लगाती स्वास्थ्य कार्यकर्ता राधिका।

नीचे: बलिया में एक बच्चे को पोलियो की खुराक पिलाई जा रही है।

अनीता खेमका

है। वास्तव में गावी के सक्रिय होने के पहले कुछ सालों में प्रभावी और आसानी से इस्तेमाल में आने वाली तकनीकों के चलते ही विकासशील देशों में टीकाकरण कार्यक्रम को तेजी से बढ़ाने में मदद मिली। विकसित देशों में हेपेटाइटिस का टीका पिछले 15 साल से था लेकिन इसे विकसित देशों तक पहुंचाने में गावी ने अहम भूमिका निभाई। पांच साल में नौ करोड़ शिशुओं को यह टीका दिया गया और यह गावी की पहली बड़ी सफलताओं में से है। गावी ने टीका निर्माताओं से बात कर हेपेटाइटिस बी को डीटीपी के पुराने टीकाकरण में शामिल करवाया जिससे कि इस नए उत्पाद के आसानी से बच्चों तक पहुंचाने का मार्ग प्रशस्त हो गया। इस प्रयास के नतीजे अब मिल रहे हैं और नई सप्लाई के बाज़ार में आने से टीके की कीमत भी कम हो रही है जिससे गरीब देशों को लाभ हो रहा है।

सालों तक यूएसएड ने एक ऐसी विशेष सिरिंज के विकास और उसको बढ़ावा देने के लिए सहायता दी जो आसान, सुरक्षित हो और तुरंत काम करे और एक बार इस्तेमाल के बाद इस्तेमाल में न ली जा सके। इससे यह खतरा नहीं रहता कि सिरिंज के फिर से इस्तेमाल से एचआईवी या अन्य रोग फैल जाए। दुनिया के गरीब देशों में बड़े पैमाने पर इन सुरक्षित सिरिंजों को पहुंचाने के लिए गावी ने इन्हें करोड़ों की संख्या में खरीदा। गावी ने टीकाकरण कार्यक्रम में हर देश में तीन साल के लिए इन सुरक्षित सिरिंजों की पर्याप्त संख्या पहुंचाई। अब यह सिरिंज इन देशों के टीकाकरण कार्यक्रम का हिस्सा बन गई है।

दनिया में टीकों के व्यवसाय पर भी गावी की पहल ने सकारात्मक प्रभाव छोड़ा। उसने टीका निर्माताओं को बताया कि किस तरह विकासशील देशों को टीके मुहैया कराकर वे लाभ कमा सकते हैं। इससे टीकों की सप्लाई बढ़ी है और कीमतें गिरी हैं।

गावी का इरादा विकासशील देशों में टीकों को तुरंत पहुंचाने का है। पहले टीकों के विकसित देशों में आने के 15 से 20 साल बाद तक ये टीके विकासशील देशों में पहुंचते थे। नवंबर 2006 में गावी ने ऐसे ही दो प्रस्ताव अनुमोदित किए। इसके तहत अमेरिका और यूरोप के टीकाकरण कार्यक्रमों का हिस्सा बने कुछ नए टीकों को विकासशील देशों में वितरित किया जाएगा जो ऐसी बीमारियों से बच्चों को बचाएंगी जिनसे 15 लाख बच्चे हर साल मरते हैं। एक टीका रोटावायरस से बचाएगा जो घातक डायरिया का जनक है और दूसरा टीका न्यूमोकॅकस से जो न्यूमोनिया, मेनिंजाइटिस ओर सेप्सिस का बड़ा कारण है।

अमेरिका गावी गठबंधन का प्रमुख सदस्य है लेकिन यूएसएड ने स्वतंत्र तौर पर भी कई तरह की पहल की हैं। इनमें एक बार के बाद इस्तेमाल न की जा सकने वाली सिरिंज के अलावा टीकों को बिना रेफ्रिजरेशन के भी सीमित समय तक सुरक्षित रखने की तकनीक शामिल है। इससे उन दूरदराज के इलाकों में भी टीकाकरण अभियान को गति दी जा सकती है जहां रेफ्रिजरेशन की व्यवस्था नहीं है।

यूएसएड मलेरिया का टीका विकसित करने के लिए शोध में भी मदद दे रहा है। विकसित देशों में यह बीमारी नहीं है लेकिन विकासशील देशों में इसके कारण हर साल 10 लाख लोगों की जान चली जाती है जिनमें 75 फ़ीसदी अफ्रीकी बच्चे होते हैं।

***केंट हिल** यूएसएड के वैश्विक स्वास्थ्य ब्यूरो की असिस्टेंट एडमिनिस्ट्रेटर हैं।*

भारत में पोलियो के मामले बढ़े

भारत सरकार के अनुसार इस साल 26 मई तक पोलियो के 55 नए मामले सामने आए हैं। वर्ष 2006 की इसी अवधि के मुकाबले यह संख्या लगभग दो गुनी है। बच्चों को विकलांग बना देने वाले इस विषाणुजनित रोग के पिछले साल 676 नए मामले सामने आए थे।

पोलियो के फैलने के लिहाज से जोखिम वाले गांवों और झुग्गी बस्तियों में कार्यरत 3800 सामुदायिक कार्यकर्ताओं के प्रयासों के बावजूद टीकाकरण का खामोश विरोध बड़ी समस्या बना हुआ है। उन इलाकों में जहां बच्चों को इस रोग का जोखिम सबसे ज़्यादा है, वहां माता-पिता, सामुदायिक नेता और धार्मिक अगुआ बच्चों को नियमित टीकाकरण का लाभ लेने की अनुमति देने से इनकार कर देते हैं।

इस विरोध और साफ जल आपूर्ति एवं स्वच्छता के अभाव के चलते इस बीमारी के मामले कम करने में भारत को पहले मिली सफलता अब संकट में है। वर्ष 2004 में उम्मीद थी कि पोलियो को भारत से वर्ष 2005 तक पूरी तरह खत्म कर दिया जाएगा। लेकिन अब लगातार दूसरे साल पोलियो के मामले बढ़े हैं।

यूएसएड और पोलियो से जुड़े अन्य भागीदारों ने हाल ही में अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय विशेषज्ञों के पोलियो संचार तकनीकी सलाहकार समूह की बैठक में हिस्सा लिया। इस बैठक में इस बात पर ज़ोर दिया गया कि अविश्वास और विरोध के मसलों पर तुरंत ध्यान दिए जाने की ज़रूरत है। ऐसा माहौल बनाने की ज़रूरत है जिसमें इस तरह की चिंताओं पर खुलकर चर्चा हो सके और आवश्यक स्पष्टीकरण दिए जा सकें।

ऐसे लोग जो अपने बच्चों को पोलियो का टीका नहीं देने दे रहे हैं, यदि उन्हें अपने कारण बताने को प्रोत्साहित किया जा सके तो इस बात का अवसर रहता है कि उन्हें समझाया जा सके। उन्हें बताया जा सकता है कि पोलियो का टीका क्या है, इसके अंदर क्या है, यह कैसे काम करता है और इसके न लेने पर बच्चे को क्या हो सकता है। सामुदायिक कार्यकर्ताओं और चिकित्साकर्मियों के लिए दरवाजे बंद होने की अपेक्षा यह बेहतर है।